Bihar Board Class 6 Hindi Notes Chapter 18 शेरशाह का मकबरा

शेरशाह का मकबरा Summary in Hindi

पाठ का सार-संक्षेप

यह आलेख एक यात्रा-वर्णन है। एक स्कूल के छात्र-छात्रा शेरशाह के मकबरे की सैर के लिये जाते हैं। शेरशाह का यह प्रसिद्ध मकबरा बिहार प्रदेश के सामाराम शहर के पास स्थित है। यह मकबरा अपनी स्थापत्य कला के लिये जाना जाता है। लाल पत्थरों से निर्मित यह मकबरा अपनी सुन्दरता के लिये विख्यात है और दूर-दूर से पर्यटक इसे देखने के लिये आते हैं। शेरशाह की गणना भारत के महान शासकों में की जाती है। अपने अल्प शासन काल में शेरशाह ने तत्कालीन जनमानस की सेवा और कल्याण के लिये अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये। अपनी वीरता के लिये भी वह जाना जाता है और भारत के महान शासलों में उसकी गणना की जाती है।

अपने विद्यालय के प्रधानाध्यापक (हेडमास्टर) और अन्य शिक्षकों के साथ बस से सासाराम की यात्रा पर निकल पड़ते हैं। बस में प्रधानाध्यापक के अतिरिक्त आशा और महिमा मैडम तथा पूर्णनाथ सर भी जाते हैं। पूर्णनाथ सर इतिहास पढ़ाते हैं। अत: बच्चों को उनका साथ मिलने से ज्यादा आनन्द आता है।

अक्टूबर का महीना था। धूप खिली थी। मौसम अत्यन्त सुहावना था और – सभी बच्चों में इस यात्रा के प्रति विशेष उत्साह था। बस मुख्य मार्ग पर आकर सरपट दौड़ने लगती है। बच्चों की उत्सुकता उस स्थान विशेष को जानने के – लिये बढ़ जाती है और वे तरह-तरह के प्रश्न अपने शिक्षक से पूछने लगते हैं। सूरज के विशेष आग्रह पर पूर्णनाथ सर ने बताना शुरू किया। वे कहते हैं – "शेरशाह भारत के महान शासकों में एक थे। उनका जन्म सन् 1472 में हुआ था। उनके पिता का नाम हसन खाँ था जो एक बड़े जागीरदार थे। शेरशाह का बचपन का नाम फरीद खाँ था। बचपन में फरीद ने अकेले ही एक शेर को मार दिया था और तबसे ये शेर खाँ कहे जाने लगे। बहुत कम उम्र में ही शेरशाह को अपने पिता की जागीर सम्हालनी पड़ी पर इससे उनकी प्रशासन की क्षमता में वृद्धि हुयी। शेरशाह ने दिल्ली के बादशाह हुमायूँ को हराकर दिल्ली की गद्दी पर कब्जा कर लिया और सूरीवंश की स्थापना का गौरव प्राप्त किया।

उस समय उनकी आयु 68 वर्ष की थी। पूर्णनाथ सर बताते जा रहे थे-
"उनकी सेना ज्यादातर बिहार के सिपाही थे और यह युद्ध सन् 1540
के आसपास कन्नौज में हुआ था। किसी भी युद्ध को जीतने के लिये
साहस की आवश्यकता होती है।" बच्चे एक के बाद एक प्रश्न पूछते जा रहे थे। राजू ने पूछा – "सर उनके पास तो बहुत सारा रुपया-पैसा होगा? वे बहुत आराम से रहते होंगे?' सर ने उत्तर दिया- "नहीं ऐसी बात नहीं है। इन्हें अपनी जनता की बहुत चिन्ता रहती थी। वे केवल पाँच वर्ष ही शासन कर सके परन्त अपनी जनता की सेवा के लिये बहुत सारे कल्याणकारी कार्य किये। सड़कें बनवायीं, सड़कों के किनारे यात्रियों के ठहरने के लिये जगह-जगह सराय का निर्माण करवाया, पीने के पानी के लिये कुएँ खुदवाये। सड़कों के किनारे किनारे वृक्ष लगवाये – डाक और संचार व्यवस्था को सुदृढ़ किया। राजस्व व लगान की व्यवस्था में सुधार लाकर उसे किसानों के लिये उपयोगी एवं लाभकारी बनाया। उसकी गिनती एक न्यायप्रिय बादशाह के रूप में की जाती थी।"

https://www.evidyarthi.in/

इस लम्बी वार्ता के क्रम में सड़क एक चौड़ी सड़क पर आ गयी थी। पूर्णनाथ सर ने कहा-"देखो! यह सड़क ग्रैंड ट्रंक रोड के नाम से जानी जाती है। यह कोलकाता से पेशावर (पाकिस्तान) तक जाती है। इस सड़क को भी शेरशाह ने ही बनवाया था। उनका यह एक महान योगदान था।" बस सासाराम शहर में प्रवेश कर गयी और शहर की सड़कों से गुजरती हुयी एक बड़े तालाब के किनारे आकर रूक गयी। सर ने कहा लो आ गया शेरशाह का मकबरा!"

बच्चे इसकी सुन्दरता पर चकित हो रहे थे। जमाली ने इसे देखते ही कहा – "इतना बड़ा और इतना सुन्दर।' सभी बच्चे बस से उतरकर एक जगह जमा हो गये। पूर्णनाथ सर ने कहा – "यह मकबरा तक जाने का मुख्य द्वार है। इसके दोनों ओर मस्जिद है। पानी के बीच मकबरा बना देखकर बच्चों को बहुत आश्चर्य हो रहा था। एक बच्चे ने पूछा सर! मकबरे का निर्माण किसने करवाया? पूर्णनाथ सर ने बच्चे की जिज्ञासा शान्त करते हुये बताया- सन 1545 ई. में कालिंजर के किले की घेराबंदी के समय एक विस्फोट में शेरशाह 'का निधन हो गया। अपने पिता की मृत्यु के बाद शेरशाह का पुत्र इस्लाम शाह सूरी उनका उत्तराधिकारी बना। उसी ने अपने पिता के सम्मान में यह मकबरा बनवाया। मकबरे को सुन्दरता प्रदान करने के लिये उसे एक तालाब के बीच बने एक ऊँचे चौकोर चबूतरे पर बनाया गया है। इस तालाब को, इस मकबरे को अद्वितीय स्थापत्य कला का नमूना के रूप में प्रस्तुत करने के लिये विशेष रूप से खुदवाया गया था जो आज भी मौजूद है। सर ने बच्चों से पूछा

"मकबरा किस चीज से बना है?" बच्चों ने उत्तर दिया – "पत्थर से।" इसकी कितनी मंजिलें हैं? तीन-सभी ने एक स्वर में उत्तर दिया। सर ने बताया "यह मकबरा 45 मीटर से भी ऊँचा है और इसका गुंबद ताजमहल के गुंबद से 13 फीट बड़ा है। साथ ही यह मकबरा अफगान स्थापत्य शैली का विशेष नमूना है।

बच्चे और शिक्षकगण घूमते-घूमते -मकबरे के मध्य भाग में पहुँच गये थे और इसमें की गयी नक्काशी और ऊपर बनी जालियों को देखकर उसकी प्रशंसा कर रहे थे। पूर्णनाथ सर ने बताया – " इस मकबरे में शेरशाह सूरी के अतिरिक्त उनके चौबीस साथी भी दफन किये गये हैं। कुछ पर्यटकों ने इस ऐतिहासिक इमारत पर अपनी ओर से कुछ-कुछ लिख दिया था- सर ने बताया ऐसा करना उचित नहीं है क्योंकि ये इमारतें देश की धरोहर हैं और इन्हें गंदा करना राष्ट्र की सम्पत्ति को बर्बाद करना है। यह मकबरा अब देश की संरक्षित ऐतिहासिक सम्पत्ति की सूची में आ गया है और इसके रख-रखाव पर लाखों रुपये सरकार के द्वारा खर्च किये जा रहे हैं।

सर ने बच्चों से पूछा इसे साफ और सुन्दर बनाये रखने का दायित्व
किस पर है? बच्चों ने एक स्वर में उत्तर दिया – " हम पर यानी इस देश
के सभी नागरिकों पर।"

घूमते-घूमते दिन के ढाई बज चुके थे। बच्चे भूख से व्याकुल हो रहे थे। सबने एक साथ खाना खाया और वापसी यात्रा के लिये बस पर सवार हो गये।

https://www.evidyarthi.in/